ग्रामीण विकास हेतु मनरेगा की भूमिका : बाँका जिला (बिहार) के संदर्भ में भौगोलिक अध्ययन

गौरव कुमार
अतिथि व्याख्याता, भूगोल विभाग
टी० एन० बी० कॉलेज, भागलपुर
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

शोध–सार

ग्राम–बहुल लोकतांत्रिक, समाजवादी अर्थव्यवस्था वाले भारतवर्ष के लिए ग्रामीण विकास चरम लक्ष्य है। राष्ट्र का सामाजिक–आर्थिक प्रगति में केन्द्र सरकार द्वारा संचालित ग्रामीण विकास हेतु मनरेगा योजना का अनन्य योगदान है। मनरेगा का उद्देश्य देश के ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे परिवार को एक वित्त वर्ष में कम से कम 100 दिनों का गारण्टीयुक्त मजदूरी प्रदान करना है। वर्ष 2014–15 में दिनों की संख्या 150 कर दी गई है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत अधिकांशतः ग्रामीण आधारभूत संरचनाओं को पुनरूद्धार, नवीकरण एवं मरम्मत कार्य कराया जाता है।

प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य बिहार राज्य के बाँका जिले के संदर्भ में ग्रामीण विकास हेतु मनरेगा योजना अपने उद्देश्यों की पूर्ति कहाँ तक सफल हुए, इसकी समीक्षा करना,, जॉब कार्ड की स्थिति का पता लगाना, कार्य दिवस एवं दिव्यांग लाभार्थी व्यक्ति का आकलन करना आलेख का अभीष्ट है।

शब्द कुंजी : लोकतांत्रिक, अर्थव्यवस्था, विकास, नवीकरण, दिव्यांग ।

1. भूमिका :

भारत एक विकासशील देश है, जो प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों का युक्ति–युक्त प्रयोग कर निरन्तर विकास के पथ पर अग्रसर है। वर्तमान भारत तीव्र गति से उभरती हुई अर्थव्यवस्था के रूप में प्रकट है। लेकिन बढ़ती जनसंख्या एवं संकुचित हो रहे प्राकृतिक संसाधनों ने इसके विकास की राह में अवरोध उत्पन्न करने का कार्य किया है। इतनी विशाल जनसंख्या को आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराना असंभव नही ंतो कठिन अवश्य है। बेरेजगारी की दर निरन्तर बढ़ती जा रही है, अमीर और गरीबी के मध्य खाई और अधिक गहरी होती जा रही है। बेलगाम मंहगाई ने तो आम आदमी की कमर तोड़ दी है। दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करना आज एक सपना बन गया है। यद्यपि भारत सरकार विकास के लिए विभिन्न योजनाओं की शरूआत प्रतिवर्ष करती है, किन्तु विकास स्तर का ग्राफ सन्तोषजनक नहीं है। वास्तव में योजनाओं से लाभांवित होने का प्रतिशत लगभग 15–18 के मध्य है, योजनाओं का वास्तविक लाभ अन्तिम स्तर पर खड़े व्यक्तियों को सुलभ

नहीं हो पा रहा है। वास्तविक आँकड़ों की प्राप्ति न हो पाने के कारण जनसंख्या का एक वृहत् भाग योजनाओं के लाभ से वंचित रह जाता है, जिसके कारण सन्तोषजनक परिणाम प्राप्त नहीं हो पाता है।

किसी देश की वास्तविक प्रगति जानने के लिए उस देश की ग्रामीण पृष्ठभूमि के सामाजिक एवं आर्थिक विकास को जानना बहुत जरूरी है। गाँवों के सामाजिक एवं आर्थिक की स्थिति ही ग्रामीण विकास के स्तर का बोध कराती है। ग्रामीण विकास एक क्षेत्रीय अवधारणा है जिसमें मुख्य रूप से सामाजिक, आर्थिक, राष्ट्रीय आदि क्षेत्रों में आवश्यकतानुसार धनात्मक परिवर्तन होते रहते है। दूसरें शब्दों में ग्रामीण विकास से तात्पर्य मनुष्यों के मानवीय कल्याण हेतु सामाजिक–आर्थिक रूप में संरचनात्मक परिवर्तन से है, जो मुख्य रूप से कृषि, तकनीक एवं जनसंख्या से संबंधित है।

विकासशील से विकसित देश बनने की प्रतिस्पर्धा में आज भारत भी अग्रसर है। इसी के चलते भारत सरकार ने बेरोजगारी की समस्या का उन्मूलन करने हेतु वर्ष 2005 में राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी अधिनियम तैयार किया गया तथा 2 फरवरी 2006 से यह अधिनियम लागू हो गया। वर्तमान में इस अधिनियम का नाम परिवर्तीत कर महात्मा गाँधी राष्ट्रीय रोजगार गारण्टी अधिनियम (मनरेगा) कर दिया गया है।

मनरेगा का उद्देश्य देश के ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे परिवार को एक वित्त वर्ष में कम से कम 100 दिनों का गारण्टीयुक्त मजदूरी प्रदान करना है। वर्ष 2014–15 में दिनों की संख्या 150 कर दी गई है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत अधिकांशतः ग्रामीण आधारभूत संरचनाओं को पुनरूद्धार, नवीकरण एवं मरम्मत कार्य कराया जाता है।

2. अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तुत आलेख के निम्नांकित उद्देश्य है :

1. अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण विकास हेतु मनरेगा योजना अपने उद्देश्यों की पूर्ति कहाँ तक सफल हुए, इसकी समीक्षा करना।

2. अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न जातिवर्ग का मनरेगा योजना से स्थिति में सुधार का आकलन करना ।

3. अध्ययन क्षेत्र में मनरेगा योजना का जॉब कार्ड की स्थिति का पता लगाना।

4. अध्ययन क्षेत्र में मनरेगा योजना से उत्पन्न व्यक्ति कार्य दिवस एवं दिव्यांग लाभार्थी व्यक्ति का आकलन करना।

3. प्राक साहित्य का समीक्षा :

प्रस्तुत आलेख का निम्नलिखित साहित्य समीक्षा है–

पाण्डेय, पी० एन० (2000) ने अपनी पुस्तक में ग्रामीणों की राजनीति में रूचि और सहभागिता का स्थिति, ग्रामीण विकास के कार्यो में भागीदारी आदि की विवेचना की है। तत्पश्चात् यादव, परशुराम (2006) ने अपने शोध कार्य में ग्रामीण विकास कार्यक्रमों का स्वतंत्रता से पूर्व और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद किए गये प्रयासों की विस्तृत विवेचना की है। तदुपरांत पन्त, डॉ० डी० सी० (2011) ने अपनी पुस्तक में ग्रामीण विकास की समस्याओं, ग्रामीण विकास हेतु योजनाओं एवं कार्यक्रमों का विस्तृत विवरण दिया है। इसी क्रम में सिंह, कटार (2011) ने अपनी में ग्रामीण विकास का संकल्पना, ग्रामीण विकास के लिए नियोजन की विस्तृत प्रस्तुत की है। मिश्रा, श्वेता (2012) ने अपने शोध कार्य में ग्रामीण विकास का योजनाएँ एवं सुझाव, भूमि उपयोग नियोजन, जलप्लावन : समस्याएँ एवं समाधान आदि के बारे में सुझाव प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त जे० ई० दास (1955), एल० डी० स्टाम्प(1960), एम० एस० विश्वनाथ (1967), एल० राविन्स (1968), सी० पी० भाव (1981), आर० वी० त्रिपाठी (1984), ए० डी० एन० वाजपेयी (1990), प्रशांत कुमार (2018) आदि शोधकर्ताओं ने ग्रामीण विकास से सर्वक्षेत्रीय पहलुओं का विश्लेषण किया है।

4. अध्ययन क्षेत्र :

अध्ययन क्षेत्र बिहार राज्य के भागलपुर प्रमण्डल के अंतर्गत स्थित है, जिसका उदय 21 फरवरी 1991 ई० को हुआ है। यह जिला 2430 से 2507 उत्तरी अक्षांश तथा 8630 से 8712 पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित है, जिसका कुल क्षेत्रफल 3020 वर्ग कि०मी० है। इसके उत्तर में भागलपुर, पश्चिम में जमुई, पूरब तथा दक्षिण में क्रमशः गोड्डा तथा देवघर (झारखण्ड) जिले स्थित हैं। इस जिले में कुल 11 प्रखण्ड–सह–अंचल, 185 पंचायत तथा कुल 2111 गांव है। बाँका एक मात्र अनुमण्डल, जिला मुख्यालय तथा नगर है। इस जिले की कुल जनसंख्या 20,29,339 (2011) है, लिंगानुपात 908 प्रतिहजार है, जनघनत्व 533 प्रति वर्ग कि0मी0 है, साक्षरता की दर 60.12 प्रतिशत है।

अध्ययन क्षेत्र की अवस्थिति

चित्र संख्या– 01

5. परिकल्पना

1. मनरेगा योजना शतप्रतिशत जॉब कार्ड मुहैया कराता है।
2. मनरेगा योजना क्रियान्वित होने से लोगों के आर्थिक आय में वृद्वि होती है।

6. विधितंत्र :

अध्ययन की विधि विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक है। अध्ययन सामग्री की प्राप्ति शोधग्रन्थों, संदर्भ ग्रन्थों एवं प्रतिष्ठित लेखकों की पुस्तकों, आलेखों से की गई है। आँकड़ों के स्त्रोत प्राथमिक एवं द्वितीयक है। प्रश्नावली निदर्शन तथा क्षेत्रीय सर्वेक्षण के आधार पर प्राथमिक आँकड़े प्राप्त किए गए हैं तथा तथ्यों का विवेचन प्रामणिक ढंग से किया गया है।

7. मजदूरी रोजगार और आजीविका सूरक्षा :

अध्ययन क्षेत्र में मनरेगा के अंतर्गत वर्ष 2017–18 में 56921 हजार परिवारों को रोजगार उपलब्ध कराया गया तथा 2018–19 में 64607 हजार परिवार रोजगार हेतु शामिल हुआ। वर्ष 2017–18 की तुलना में वर्ष 2018–19 में 7686 हजार अधिक परिवारों को रोजगार दिया गया है साथ ही वर्ष 2017–18 में सर्वाधिक रोजगार चांनन (7790) और न्यूनतम बाँका (3853) प्रखण्ड एवं 2018–19 में भी अत्यधिक रोजगार चांनन (10416) और निम्नतम धोरैया (4310) प्रखण्ड था।

तालिका संख्या–01

बाँका जिला : रोजगार चाहने वाले व्यक्तियों की संख्या, 2017–2019

क्रम० सं०	प्रखण्ड	2017-2018			2018-2019		
		रोजगार चाहने वाले व्यक्तियों का संख्या	उपलब्ध रोजगार	मनरेगा के अंतर्गत कार्य कर रहे परिवारों की संख्या	रोजगार चाहने वाले व्यक्तियों का संख्या	उपलब्ध रोजगार	मनरेगा के अंतर्गत कार्य कर रहे परिवारों की संख्या
01	अमरपुर	9997	7549	4871	9555	6960	5154
02	बाँका	5602	4464	3853	7059	5310	4513
03	बाराहाट	11650	7032	4287	12080	7631	5093
04	बौंसी	9987	7835	6655	9772	7837	6693
05	वेलहर	7731	5093	4356	8544	5968	5221
06	चांनन	12383	9463	7790	15458	12869	10416
07	धोरैया	5785	4310	3894	7154	4919	4310
08	फुल्लीडुमर	7577	5494	4590	7450	5287	4737
09	कटोरिया	8626	6672	5610	10676	7206	6025
10	रजौन	8422	6802	5927	10524	7739	6610
11	शंभूगंज	9138	5652	5088	8706	6260	5835
	कुल	96898	70366	56921	106978	77986	64607

स्त्रोत : ग्रामीण विकास अभिकरण, बाँका, 2019

8. मनरेगा जॉब कार्ड की स्थिति :

तालिका संख्या 02 से स्पष्ट है कि वर्ष 2017–18 में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति व अन्य जाति क्रमशः 49491, 23223 व 244944 व्यक्तियों को जॉब कार्ड दिया गया है, वही 2018–19 में अनुसूचित जाति के 52214, अनुसूचित जनजाति के 24833 तथा अन्य जाति के 266559 व्यक्तियों को जॉब उपलब्ध कराया गया है। वर्ष 2017–18 में अनुसूचित जाति में सर्वाधिक रजौन (7808) और निम्नतम बाराहाट (2560), अनुसूचित जनजाति में सबसे अधिक बौंसी (5499) व सबसे कम (74) तथा अन्य जाति में अत्यधिक व निम्नतम क्रमशः शंभूगंज (27459) व फुल्लीडुमर (18250) प्रखण्डों के व्यक्तियों को जॉब कार्ड दिया गया है। वर्ष 2018–19 में सबसे अधिक अनुसूचित जाति में रजौन (8334) और सबसे कम बौंसी (2975), अनुसूचित जनजाति में अत्यधिक व निम्नतम क्रमशः बौंसी (6080) व रजौन(82) तथा अन्य जाति में बौंसी (29969) और फुल्लीडुमर (19313) प्रखण्डों के व्यक्तियों को जॉब कार्ड दिया गया है।

तालिका संख्या–02

बाँका जिला : मनरेगा जॉब कार्ड की स्थिति, 2017–2019

क्रम० सं०	प्रखण्ड	2017–18				2018–19			
		अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति	अन्य जाति	कुल	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति	अन्य जाति	कुल
01	अमरपुर	5707	349	22039	28094	5972	359	23960	30291
02	बाँका	4084	1932	20487	26503	4360	2059	21880	28299
03	बाराहाट	2560	91	22690	25341	2671	112	24689	27472
04	बौंसी	2658	5499	20380	28537	2975	6080	22969	32024
05	वेलहर	4148	3754	20938	28840	4312	3921	22721	30954
06	चांनन	5260	4353	21567	31180	5565	4643	24092	34300
07	धोरैया	4093	393	27016	31502	4328	406	29722	34456
08	फुल्लीडुमर	3954	1588	18250	23792	4100	1680	19313	25093
09	कटोरिया	3209	5108	20748	29065	3359	5451	21888	30698
10	रजौन	7808	74	23370	31252	8334	82	26306	34722
11	शंभूगंज	6011	82	27459	33552	6238	90	29019	35347
	कुल	49491	23223	244944	317658	52214	24883	266559	343656

स्त्रोत : ग्रामीण विकास अभिकरण, बाँका, 2019

9. कार्य दिवस की स्थिति :

बाँका जिला में वर्ष 2017–18 व 2018–19 में क्रमशः 2081293 व 2661124 व्यक्ति कार्य दिवस का काम किया है, जिसमें वर्ष 2017–18 में दिव्यांग लाभार्थी व्यक्तियों की संख्या 77 और वर्ष 2018–19 में 112 है, जो तालिका संख्या 03 से स्पष्ट है।

इसका आशय यह है कि कार्य दिवस की संख्या में लगातार बढ़ रही है, जिससे लोगों के आर्थिक आय में वृद्वि हुई है।

तालिका संख्या–03

बाँका जिला : कुल उत्पन्न कार्य दिवस की स्थिति 2017–2019

क्रम० सं०	प्रखण्ड	2017–18		2018–19	
		कुल	दिव्यांग लाभार्थी व्यक्ति	कुल	दिव्यांग लाभार्थी व्यक्ति
01	अमरपुर	200390	8	200508	13
02	बाँका	138189	2	163529	2
03	बाराहाट	148599	4	207314	6
04	बौंसी	196235	15	258911	19
05	वेलहर	142547	8	228024	8
06	चांनन	278078	3	470602	6
07	धोरैया	145342	1	171748	5
08	फुल्लीडुमर	189683	2	211279	7
09	कटोरिया	261415	5	264502	25
10	रजौन	214630	19	278251	13
11	शंभूगंज	166185	10	206456	8
	कुल	2081293	77	2661124	112

स्त्रोत : ग्रामीण विकास अभिकरण, बाँका, 2019

10. निष्कर्ष :

मनरेगा योजना के माध्यम से इस ग्रामीण बहुल, कृषि–प्रधान पिछड़े जिले में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति व अन्य जाति के व्यक्तियों को रोजगार मुहैया कराया गया है, जिससे लोगों के आर्थिक आय में वृद्वि हुई है। यदि इसी तरह मनरेगा योजना को नियमित रूप से क्रियान्वित हो तो निश्चित रूप से बाँका जिला विकास की राजमार्ग पर अग्रसर होगा।

संदर्भ :

1. सिंह, सूर्यभान (2005) : ग्रामीण विकास और पंचायतीराज, कुरूक्षेत्र

2. वर्मा, प्रदीप कुमार (2010) : सामाजिक–आर्थिक विषमताएँ एवं ग्रामीण विकास : तहसील सोहावल, जनपद–फैजाबाद का एक भौगोलिक अध्ययन, अप्रकाशित पी–एच० डी० शोध प्रबन्ध, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जैनपुर

3. पचौरी, डॉ० एस० एम० और सिन्हा, डॉ० ऐ० के (2011) : ग्रामीण विकास : समस्याएँ, चुनौतियाँ एवं समाधन, अमन प्रकाशन, मध्यप्रदेश

4. सिंह, कटार (2011) : ग्रामीण विकास : सिद्धांत, नीतियाँ एवं प्रबन्ध, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर

5. Rao, Dr. P.V.Ramana (2018) : Rural Development and Poverty Alleviation Programmes, Aryan Publication, New Delhi